ला-लोरोना

मेक्सिकन भूतनी की कहानी

ला-लोरोना

मेक्सिकन भूतनी की कहानी

चांदनी रात में नदी के किनारे सावधान रहें,

वहां की पगडंडी पर घना कोहरा घिरा होगा.

वहां आपको एक महिला दिखेगी,

जो सफेद कपड़े पहने होगी और

जिसका रंग एकदम भूतिया पीला होगा.

वो "ऐ-ईईईई! करके रोती होगी.

"मेरे बच्चों!"

आप उसकी कराह को सुन पाएंगे.

"ऐ-ईईईई! ऐ-ईईईई!"

वो आपको पकड़ना चाहेगी.

वो आपका शिकार करना चाहेगी.

वो आपको अपने लिए चाहेगी.

उस छोटी लड़की ने एक भूत का रूप कैसे लिया?

किसे पता?

यह कहानी "ला-लोरोना" नामक एक मेक्सिकन भूतनी की है, जो कभी मारिया नाम की एक लड़की होती थी.

परिवार की सराय

मारिया अपने पारिवार की सराय में कड़ी मेहनत करती थी.

वो फर्श की सफाई करती और ढेर सारे बर्तन धोती थी.

वो रात के खाने के लिए मक्के की रोटियां (तोर्तिआ) थापती थी.

वो बिस्तरों की चादरें बदलने में अपनी माँ की मदद करती थी.

पर मारिया हमेशा सोचती थी –
काश! मेरे पास इतना काम नहीं होता.
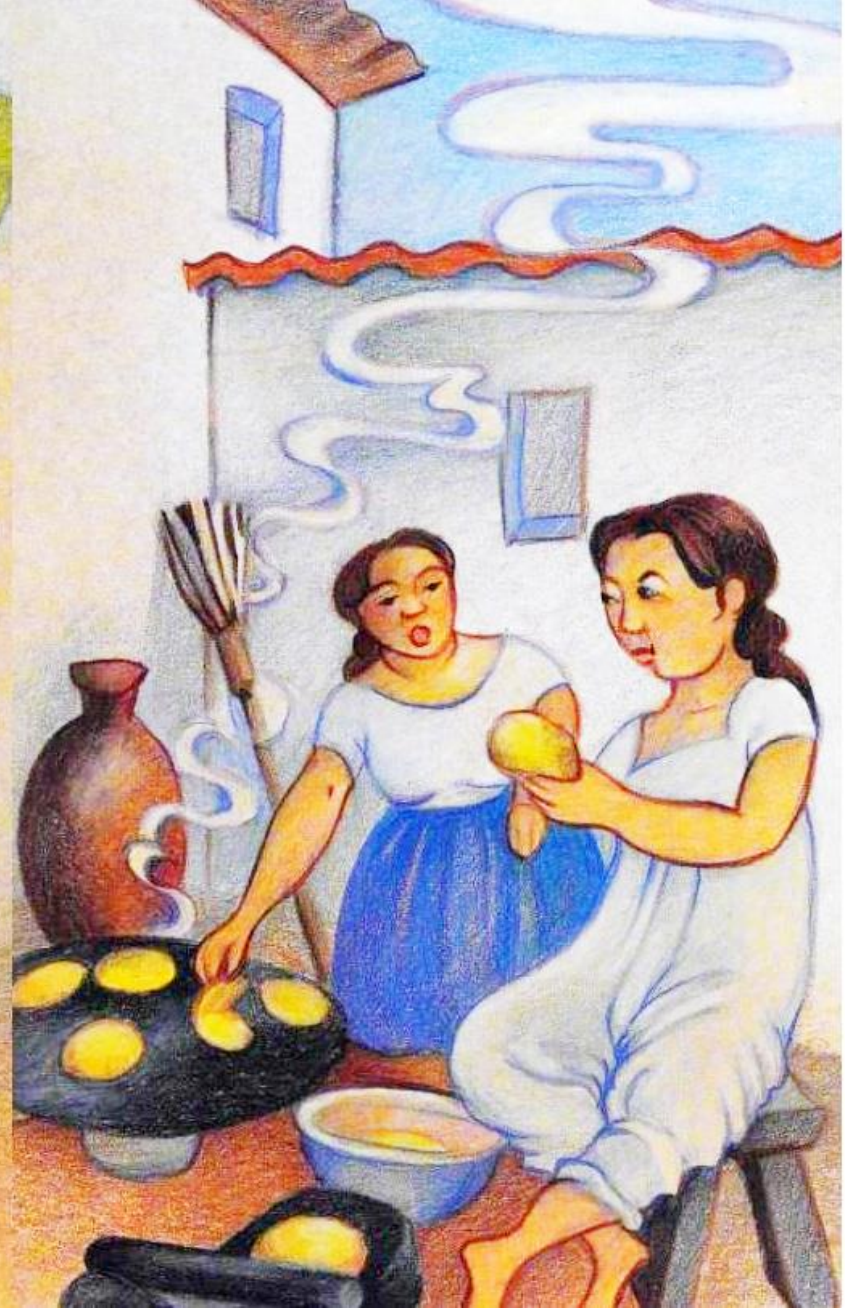
अमीर यात्री घोड़े पर सवार होकर सराय में आते थे.

कभी-कभी वे फैंसी गाड़ियों में भी आते थे.

कई मखमली कपड़े और चमकीले गहने पहनते थे.

उनके जूतों में सुनहरे रंग के बकल लगे होते थे.

मारिया उन्हें देखकर हमेशा खुश होने का नाटक करती थी.

लेकिन वो वास्तव में अपने काम के बदले में उनसे कुछ पैसे पाने की उम्मीद करती थी.

"हेलो सीनोरा!" वो उन्हें प्यार से बधाई देती थी.

पर मारिया अपने मन में सोचती थी.

वे कितने अमीर हैं!

वे कितने भाग्यशाली हैं!

मैं अमीर और भाग्यशाली पैदा क्यों नहीं हुई?

सराय — केवल मारिया और उसकी माँ ही चलाती थीं.

पापा उन्हें सालों पहले ही छोड़कर चले गए थे.

"मेरे लिए जीवन बहुत कठिन है," मारिया सोचती थी.

इसका आरोप उसने अपने पिता पर लगाया.

"जीवन कठिन है," उसकी माँ कहती थीं.

"लेकिन जीवन अच्छा भी है.
जरा सोचो, मेरी बेटी, तुम्हारे पास एक
आरामदायक घर है और एक माँ,
जो तुमसे प्यार करती है."

नीली पोशाक

कभी-कभी मारिया अपने दोस्तों के साथ खेलती थी.

वो मिट्टी में चित्र बनाती थी.

उसके दोस्त फूल और छोटे घर बनाते थे.

मारिया, महल और गाड़ियां बनाती थी.

वो सुंदर राजकुमारों के चित्र बनाती थी.

"मैं किसी दिन अमीर बनूंगी," मारिया डींग मारती थी.

"मैं उन अमीरों से भी ज्यादा रईस बनूंगी.
फिर सब लोग मुझ से ईर्ष्या करेंगे.
तब मैं मेक्सिको में सबसे खुश लड़की होऊंगी."

कभी-कभी उसकी सहेलियाँ पुराने रंगीन कपड़ों की गुड़ियों से खेलती थीं.

"चलो अपने बच्चों को झुलाओ और उन्हें सुलाओ!" उसके दोस्त कहते.

लेकिन मारिया अपना सिर हिलाती थी.

वो चिथड़ों की बनी गुड़ियों और बच्चों की परवाह नहीं करती थी.
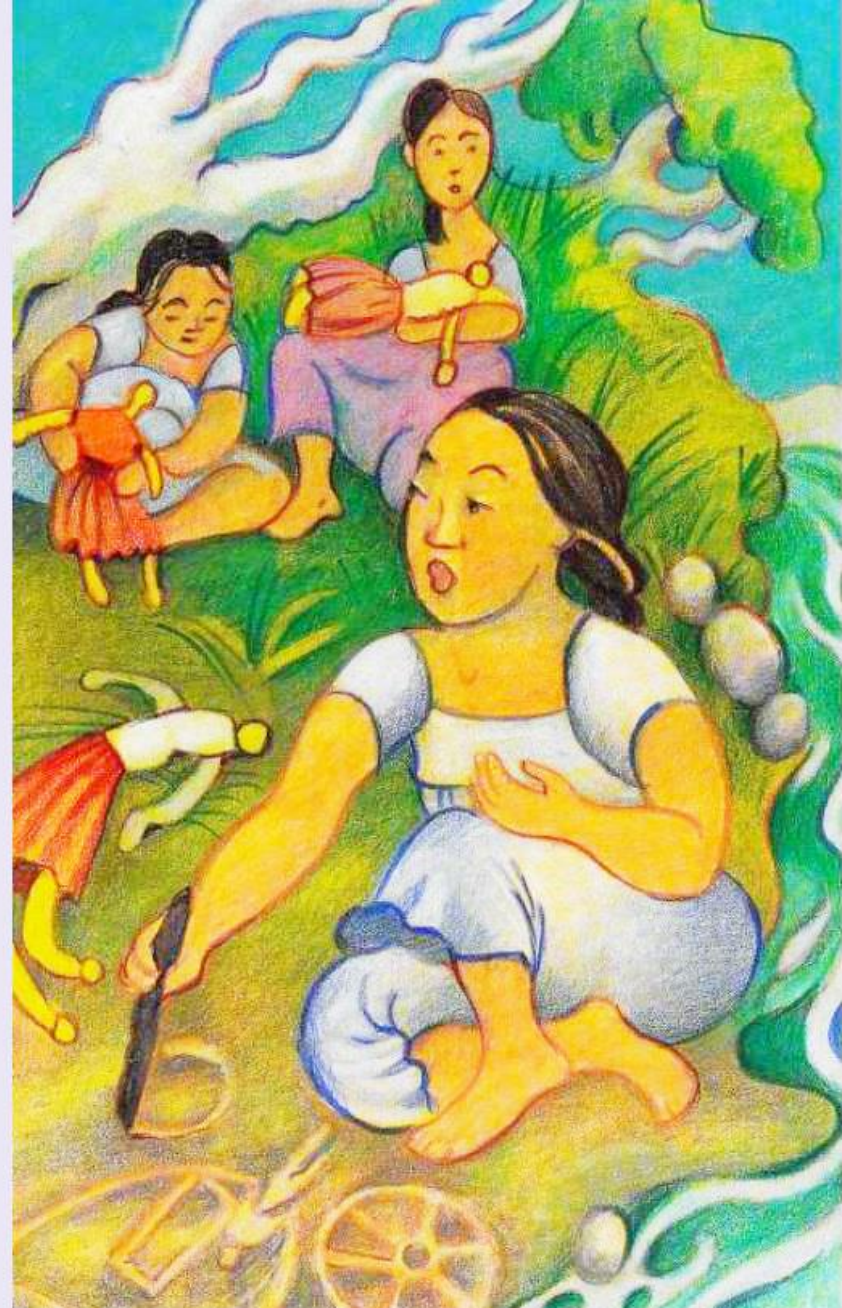
मारिया बाजार की ओर चल पड़ी.

वहां लोग ऐसी चीज़ें बेच रहे थे
जो वो खरीद नहीं सकती थी.
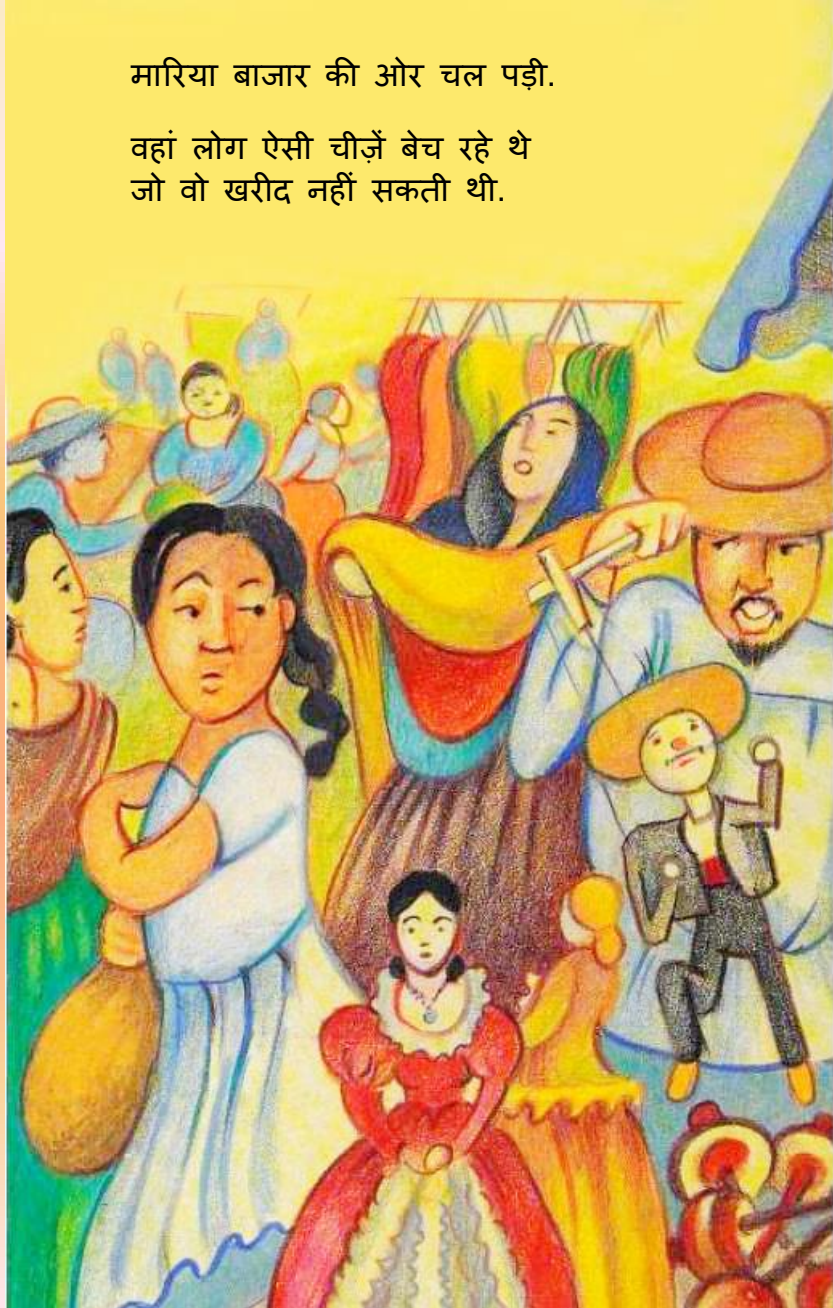
"रेबोज़ोस!" लोग चिल्लाए.

"रेबोज़ोस! यानी हस्त-निर्मित शॉल!"

मारिया अपने दोस्तों को दिखाने के लिए सुनहरे धागों और चांदी का सबसे सुन्दर शॉल चाहती थी.

उसने शानदार गुड़िए देखीं जो चमक रही थीं.
वो उन्हें चाहती थी.

वो खिलौनों की दुकान पर नाचने वाली कठपुतलियां खरीदना चाहती थी.

पर माँ उसके लिए कुछ भी नहीं खरीद सकती थी.

"मेरा जीवन बहुत कठिन है," मारिया ने कहा.

उसने इसका आरोप अपनी मां पर लगाया.

माँ इतनी गरीब क्यों थी?

"शायद माँ को लगता है कि उनका जीवन अच्छा है," उसने सोचा.

"लेकिन मेरा जीवन तभी अच्छा होगा जब मैं अमीर बनूंगी."

उस शाम, मारिया ने सराय की लंबी मेज पर मेहमानों को खाना परोसा.

एक आदमी जल्दी से अपनी पूरी कटोरी खिचड़ी खा गया.

फिर उसने और खिचड़ी मांगी.

उसने मारिया की बनाई छह मक्के की रोटियां भी खाईं.

फिर उसने और रोटियां मांगीं.

जब मारिया खाना लाने गई तब उसने उस आदमी की कुर्सी के पास एक भारी बैग देखा.

वो आदमी काफी अमीर होना चाहिए, मारिया ने सोचा.

उसका झोला शायद खजाने से भरा हो.

रात के खाने के बाद, आदमी ने अपना बैग खोला.

ध्यान से, उसने एक मुलायम साटन की पोशाक निकाली.

उसका कपड़ा सुबह के आसमान की तरह नीला था.

उसमें सैकड़ों चुन्नटें थीं.

मारिया चिल्लाई, "वो कितना सुंदर है!"

वो ड्रेस बिल्कुल मारिया के माप की थी.

मारिया कांपने लगी.

उसके पास केवल एक ही पोशाक थी,
एक पतला सफेद फ्रॉक जिसे वो हर रोज़ पहनती थी.

वो अपने फ्रॉक की कई बार मरम्मत कर चुकी थी.

मारिया को वो साटन की पोशाक एक सपने की तरह लगी.

"उत्तम!" उस आदमी ने कहा.

"देखो, तुम मेरी बेटी की उम्र की हो.
यह पोशाक मेरी बेटी को एकदम अच्छी फिट आएगी."

फिर उसने वो ड्रेस वापस अपने बैग में रख ली.

अच्छा तो फिर वो नीली पोशाक, मारिया के लिए नहीं थी?
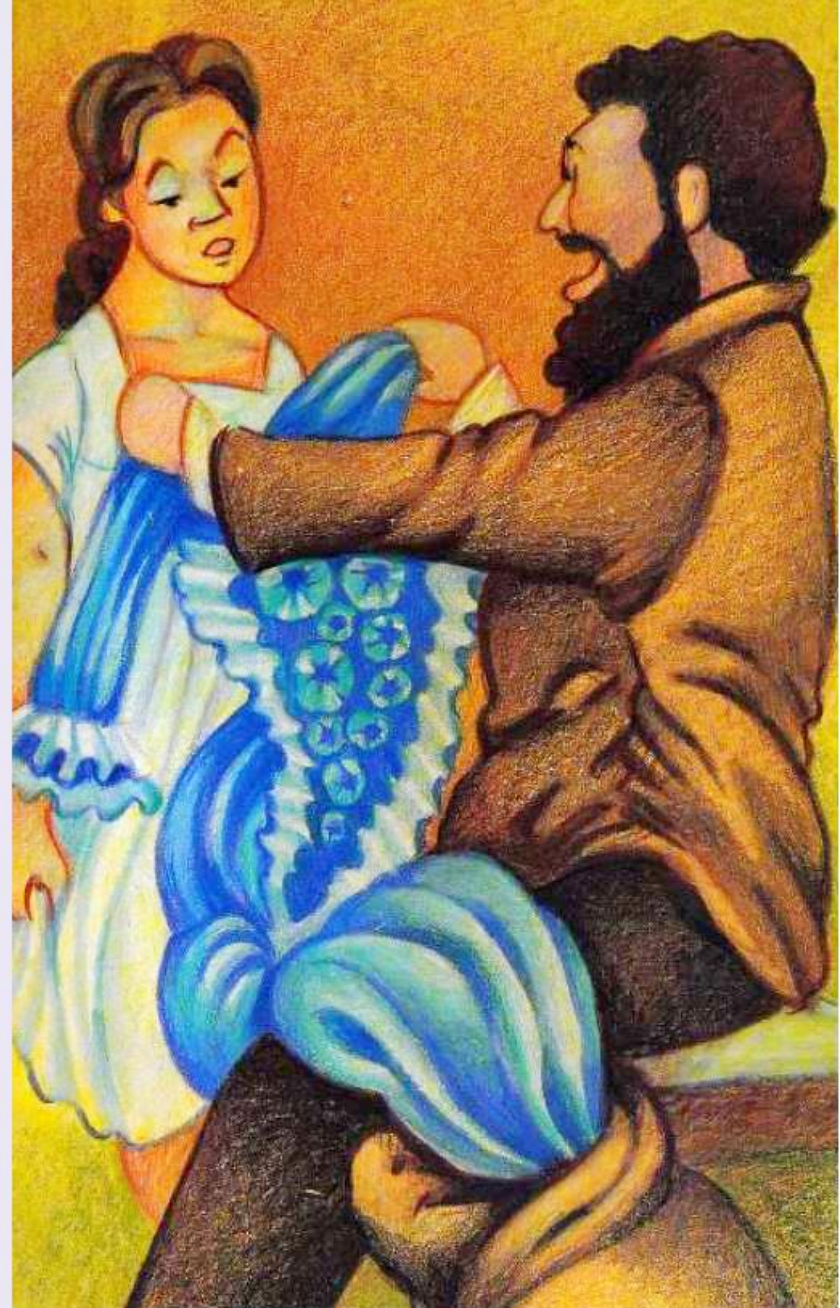
मारिया के दिल पर जैसे बिजली गिर गई हो.

वो सीढ़ी से ऊपर तेज़ी से चढ़कर गई.

वो दौड़कर अपने कमरे में गई.

फिर वो बिस्तर पर जाकर गिर पड़ी.

ये लोग कितने अमीर और स्वार्थी हैं.

"मेरा जीवन बहुत कठिन है!" वो रोई.

उसने इसके लिए उस हर अमीर मेहमान

को दोषी ठहराया जिससे वो कभी मिली थी.

एक सुंदर अतिथि

जल्द ही मारिया 18 साल की हो गई.

उसके पास अभी भी एक आरामदायक घर था और माँ, जो उससे प्यार करती थी.

लेकिन उसके ज़हन में अभी भी एक राजकुमारी के सपने थे!

उसने एक महल में रहने का सपना देखा था जहाँ वो कई नौकरों से घिरी हो.

उसने ऐसे अमीर आदमी से शादी करने का सपना देखा जो उसे बहुत सुंदर उपहार देगा.

एक दिन, एक सुंदर अतिथि उनकी सराय में आया.

उसका नाम डॉन रेमन था.

लोग उसे डॉन बुलाते थे,

क्योंकि वो धनी और बहादुर था.

डॉन रेमन एक आदर्श पति बनेगा, मारिया ने सोचा.

फिर वो उसे देखकर मुस्कुराई.

जैसे ही डॉन ने मारिया को देखा,

डॉन रेमन को मारिया से प्यार हो गया.

"क्या तुम एक दिन मेरे लिए एक बड़ा बंगला खरीदोगे?" मारिया ने पूछा.

"हाँ," डॉन रेमन ने कहा.

"क्या तुम मेरे लिए रेशम और स्पेनिश फीते वाले गाउन खरीदोगे?" मारिया ने पूछा.

"हाँ," डॉन रेमन ने कहा.

"क्या तुम मेरे लिए सितारों की तरह चमकते हीरे खरीदोगे?" मारिया ने पूछा.

"हाँ," डॉन रेमन ने कहा.

उस दिन से डॉन रेमन मारिया की सराय में आता और फिर चला जाता.

वो एक सप्ताह सराय में मारिया के साथ रहता था.

फिर अगले हफ्ते वो कहीं दूर चला जाता था.

"लेकिन क्या तुम उससे प्यार करती हो?" मारिया की माँ ने पूछा.

मारिया ने अपनी कमर कस ली.

वो डॉन रेमन से प्यार नहीं करती थी.

लेकिन वह उसके कपड़ों, उसके घोड़े और उसके धन से ज़रूर प्यार करती थी.
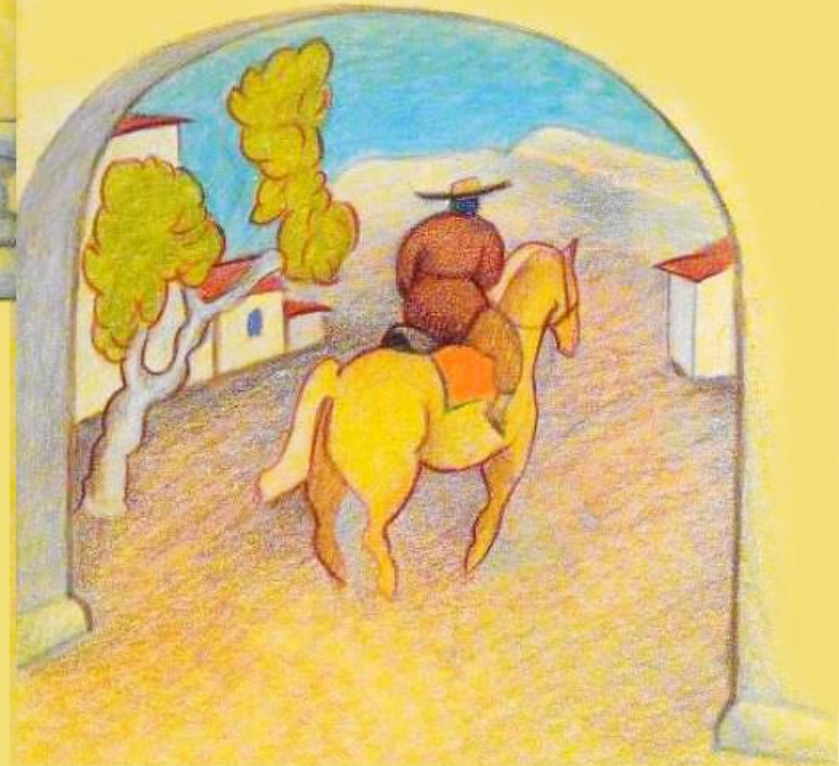
इस तरह कई साल बीत गए.

मारिया के दो खूबसूरत बच्चे हुए.

लेकिन मारिया के पास अभी भी वो नहीं था जो वो चाहती थी.

"तुम्हारा बाप मेरे लिए बाग़ों और झरनों वाला महल कब खरीदेगा?" मारिया ने अपने बच्चों से पूछा.

"मेरे सुंदर कपड़े, मेरे जेवर और मेरे नौकर-चाकर कहां हैं?" उसने अपनी माँ से पूछा.

हर रात, मारिया एक पुआल बिस्तर पर ही सोती थी.

"मेरे लिए इस तरह का जीवन बहुत कठिन है," वो रो पड़ी.

उसने उसके लिए डॉन रेमन को जिम्मेदार ठहराया.
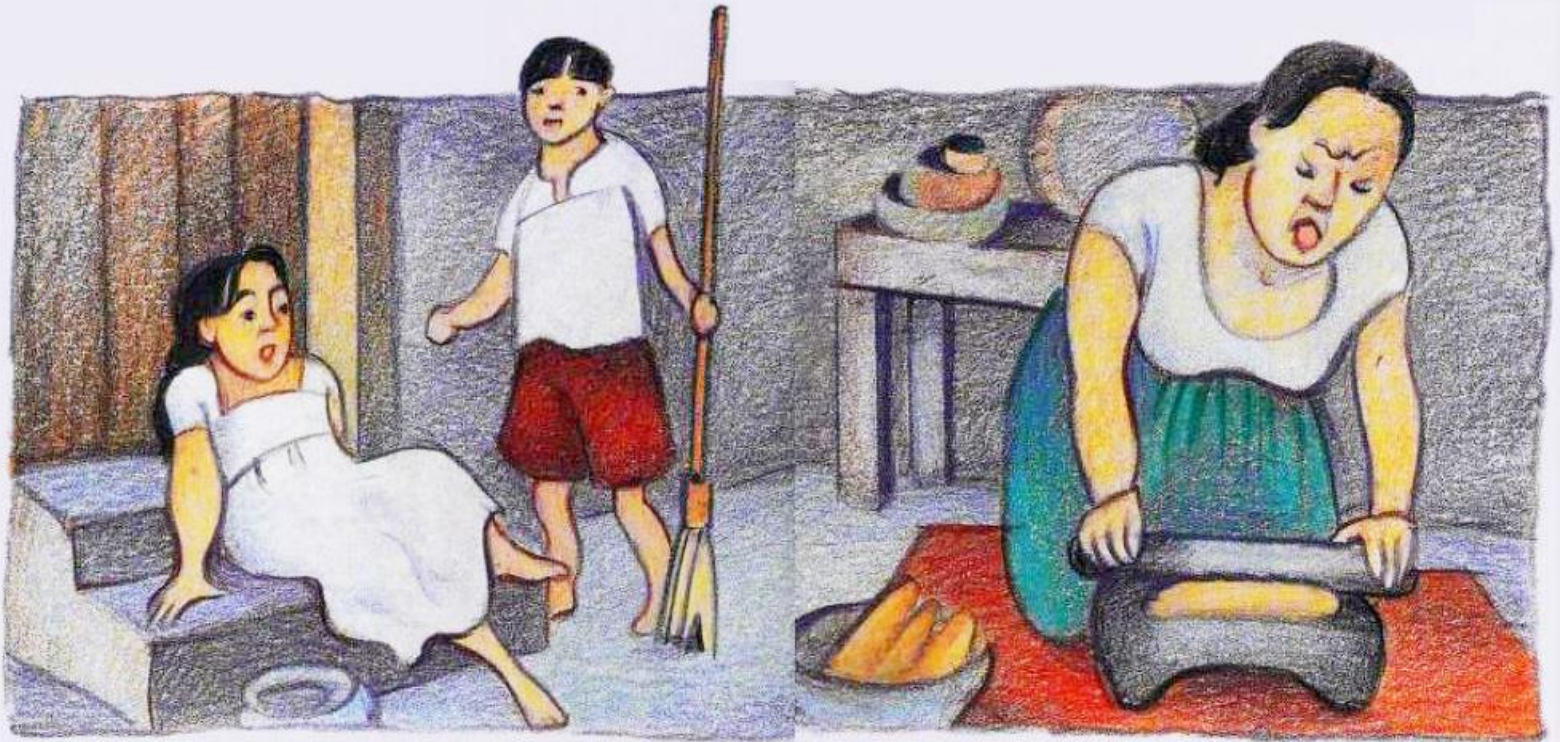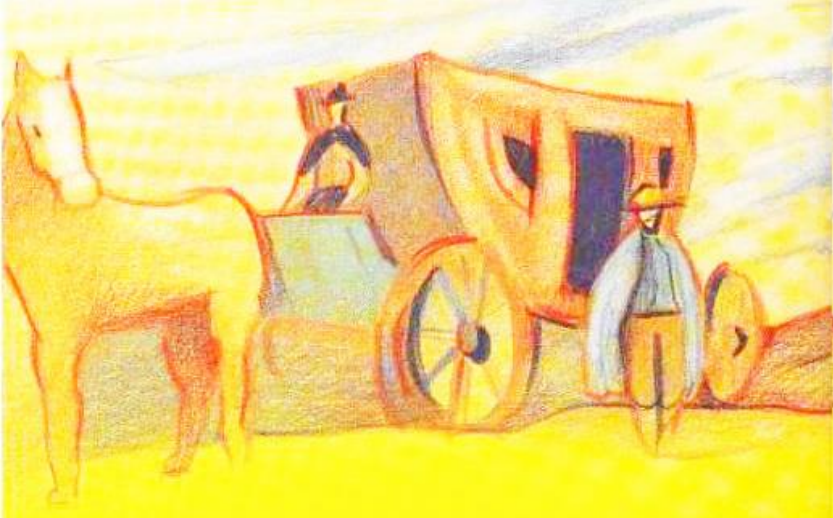
भयानक दिन

एक दिन मारिया नदी में कपड़े धो रही थी.

उसके बच्चे उसकी बगल में ही खेल रहे थे,
और रेत में मछलियों के चित्र बना रहे थे.

तभी एक गाड़ी सड़क पर आकर रुकी.

गाड़ी में से डॉन रेमन बाहर उतरा.

मारिया उत्साहित होकर उसके पास दौड़ी.

"वो गाड़ी, सिर्फ मेरे लिए है!" वो चिल्लाई.

लेकिन फिर वो रुक गई.
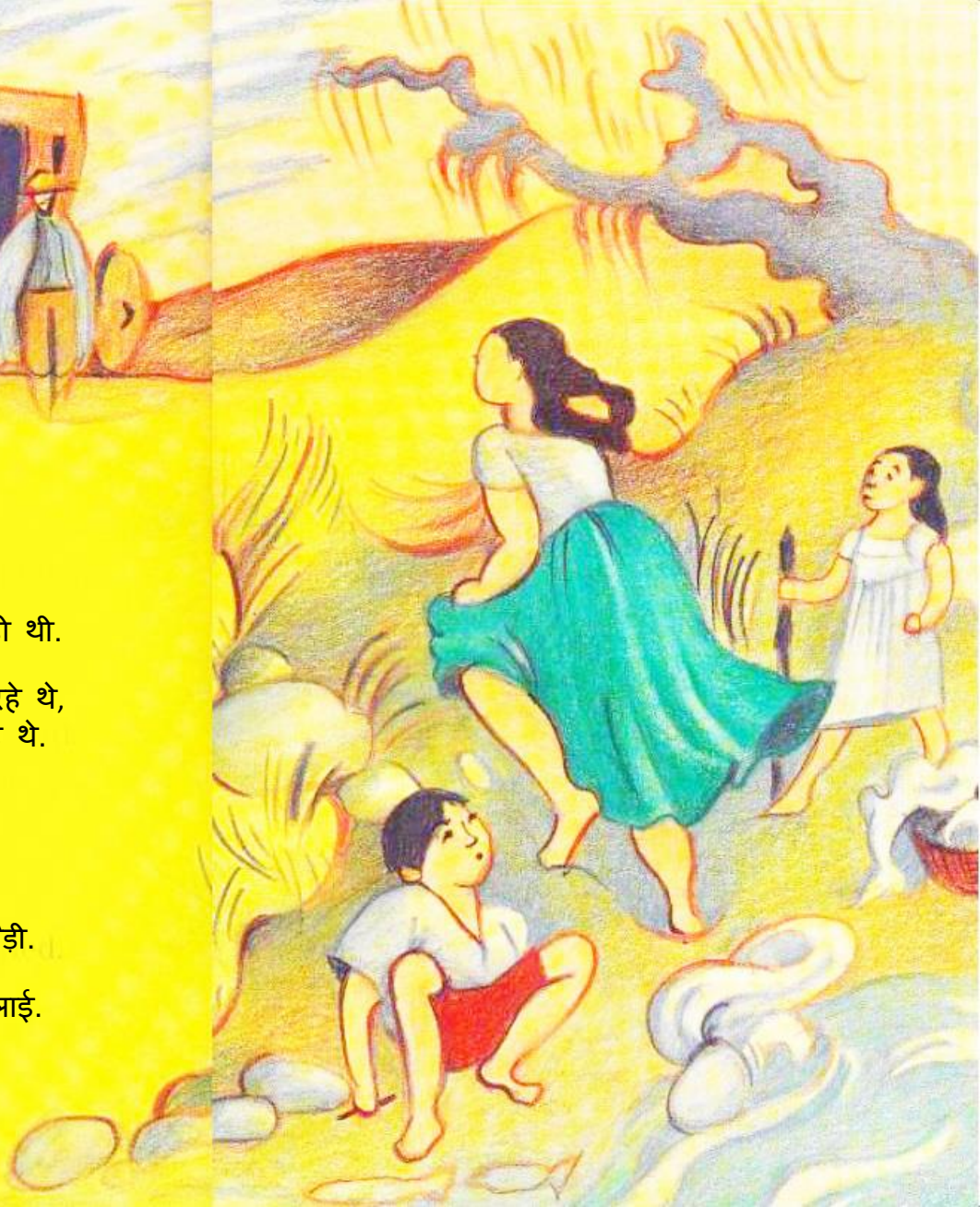
फिर एक महिला ने गाड़ी से उतरी.

डॉन रेमन ने उसे उतारने के लिए अपना हाथ आगे बढ़ाया.

वो महिला बहुत अमीर और सुंदर लग रही थी.
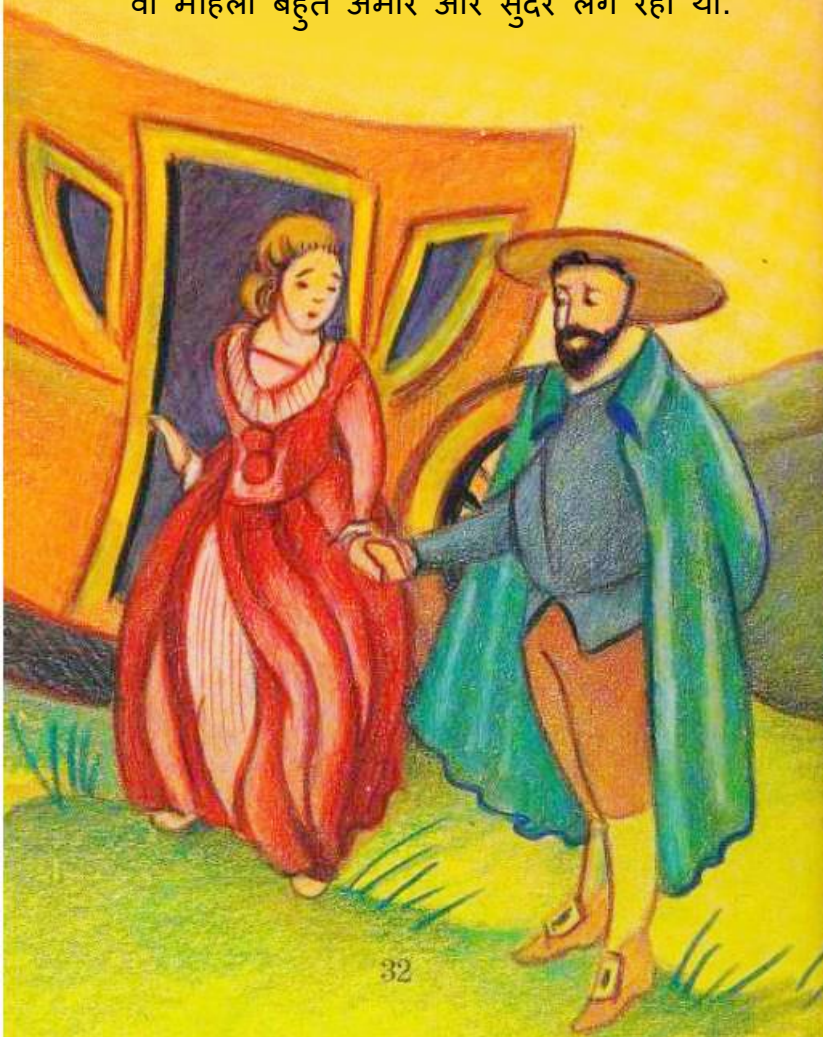
डॉन रेमन, मारिया को यह बताने आया था कि वो उस महिला से शादी करने जा रहा था.

वो अब मारिया से प्यार नहीं करता था.

वो अब अपने बच्चों से भी प्यार नहीं करता था.

वो अब मारिया को हमेशा के लिए छोड़ रहा था.
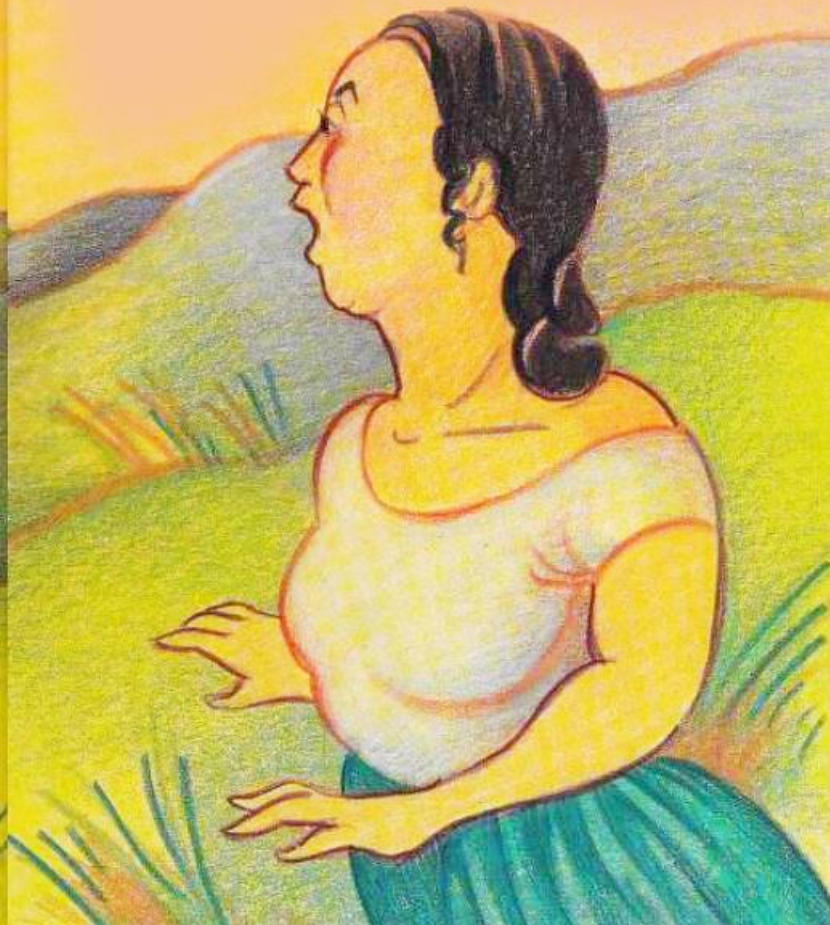
मारिया का दिल गुस्से से भर गया.

"तुम मुझे छोड़ नहीं सकते, डॉन रेमन!" वो चिल्लाई.

"तुम अपने बच्चों को छोड़ नहीं सकते!"

लेकिन तब तक डॉन रेमन और महिला गाड़ी के अंदर बैठ गए थे.

वे दूर चले गए, पहाड़ियों से बहुत दूर.

"नहीं!" मारिया चिल्लाई.

"वापस आओ, डॉन रेमन!"

मारिया ने खुद को जमीन पर फेंक दिया.

वो कांप रही थी.

वो चिल्ला रही थी.

उसने अपनी मुट्ठियों से ज़मीन पीटी.

अब उसके पास कभी चमचमाते गहने नहीं होंगे, कोई रेशमी शॉल नहीं होगा.

मारिया के सारे सपने मिट्टी में मिल गए थे.
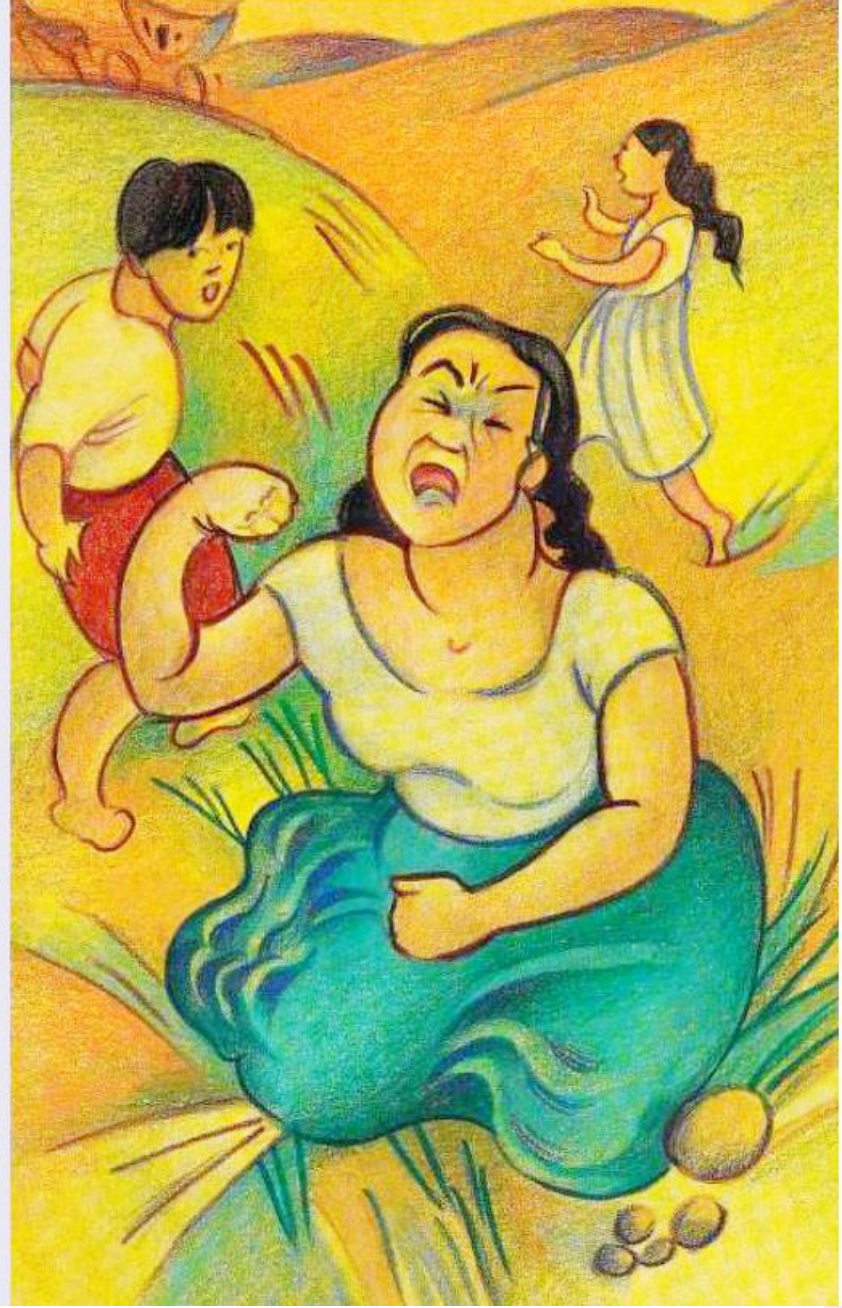
यह दोष किसका था?

क्या यह उसके बच्चों की गलती थी?

उनके बिना, शायद डॉन रेमन उसके पास रह जाता.

हाँ, बच्चे बहुत परेशान थे, उनकी नाक बहती थी और उनके पेट भूखे होते थे.

"मेरे लिए जीवन बहुत है कठिन है!" मारिया रोई.

इस बार उसने आरोप अपने बच्चों पर लगाया.

तभी, एक तेज़ हवा उठी जिससे मारिया की आँखें धूल भर गईं.

आसमान में काले बादल छा गए.

ठंडी बारिश शुरू हो गई.

मारिया धीरे से खुद अपने पैरों पर खड़ी हुई.

उसकी पोशाक मैली थी.

उसकी आँखें सूजी थीं.

उसने पीछे मुड़कर देखा

पर अब उसके बच्चे नदी के किनारे नहीं खेल रहे थे.

मारिया गुस्से में थी.

"बच्चों! तुरंत वपिस आओ!" वो चिल्लाई.

लेकिन उसके बच्चे नहीं आए.

बारिश और तेज़ हो गई.

मारिया वहाँ गई, जहां उसके बच्चे चित्र बना रहे थे.

नदी में तूफान आ गया और उसकी धार तेज हो गई.

रेत पर बने मछली के चित्र धुल गए.

अब मारिया चिंतित थी.

वो सराय की ओर दौड़ी.

पर बच्चे वहां भी नहीं थे.

"बच्चों!" मारिया ज़ोर से चिल्लाई.

क्या वे भाग गए थे?

मारिया पहाड़ी की चोटी पर दौड़कर गई.

उसके नंगे पैरों में नुकीले पत्थर और कैक्टस चुभ गए.

उसके चेहरे पर हवा, तेज़ बारिश फेंक रही थी.

उसने पहाड़ी की चोटी से उत्तर और दक्षिण की ओर देखा.

उसने पूर्व और पश्चिम में देखा.

वो बहुत दूर तक चिल्लाई.

"बच्चो, तुम कहाँ हो?"

लेकिन उसे कोई जवाब नहीं मिला.

फिर रात आई, एकदम काली-स्याह रात.

मारिया नदी के पाट के ऊपर-नीचे दौड़ी.

उसके बाल झूम रहे थे और उनसे खरपतवार और टहनियाँ उड़ रही थीं.

"मेरे बच्चे!" वो चिल्लाई.

मारिया का दिल दहशत से भर गया.

क्या उसके बच्चे तूफानी नदी में गिरे गए थे?

क्या वे डूब गए थे?

उसने अपने बच्चों को अकेला क्यों छोड़ा?

उसने बच्चों को प्यार क्यों नहीं दिया?

उसके बच्चे बहुत प्यारे थे?

"मेरे लिए जीवन बहुत कठिन है!" मारिया चिल्लाई.

इस बार उसने खुद को दोष दिया.

कल उसके दो बच्चे थे, जो उससे प्यार करते थे.

अब, बच्चों के बिना, उसके पास कुछ भी नहीं बचा था.

मारिया ने अपना चेहरा काले आसमान की ओर उठाया.

"ईईईईईई!" वो रोती हुई जंगली हवा की तरह चिल्लाई.

मारिया अपने फटे, खून निकलते पैरों पर चलती रही.

वो दिन-रात भटकती रही,

हफ्तों और महीनों तक वो अपने बच्चों को बुलाती रही.

"ईईईईईई!"

ला-लोरोना नाम की भूतनी

बहुत सारे साल बीत गए.

सदियां बीत गईं.

कुछ लोगों के अनुसार एक भयानक रात को, मारिया नदी में डूब गई.

लेकिन जब वो अपने खोए हुए बच्चों की तलाश करती है तो उसकी आत्मा चांदनी सड़कों और नदी के पाट पर छा जाती है.

पूरे मेक्सिको में वो रोती हुई महिला **ला-लोरोना** के नाम से जानी जाती है.

किसी अँधेरी रात में आप सुन सकते हैं ला-लोरोना को पेड़ों के बीच रोते हुए.

"अय-ईईईईई!" आप सुनेंगे.

"ईईईईई!"

आपको पता होना चाहिए कि आप क्या करें, क्यों है ना?

आप दौड़ें! जितनी जल्दी हो सके वहां से भाग जाएँ.

क्योंकि यह वो सवाल है जो आपको ज़रूर पूछना चाहेंगे.

अगर ला-लोरोना रात में नदी के किनारे, अगर किसी बच्चे को देखेगी, तो क्या वो यह नहीं सोचेगी कि वो उसका ही बच्चा है?

क्या वो उस बच्चे को हमेशा के लिए अपने साथ नहीं ले जाएगी?

किसे पता?

लेखक का नोट

मेक्सिको में हर बच्चा, रोती हुई महिला यानि ला-लोरोना की कहानी जानता है. दक्षिण-पश्चिमी अमरीका में भी कई बच्चों ने वो कहानी सुनी है. लेकिन बच्चों की कहानियाँ थोड़ी अलग हो सकती हैं.

हमने कहानी अपने तरीके से कही है. यह कहानी हमारे द्वारा पढ़े गए कई संस्करणों पर आधारित है. वो मध्य मेक्सिको में बच्चों, शिक्षकों और माता-पिता द्वारा बताई गई कहानी पर आधारित है, जहां हम रहते हैं.

यहाँ मेक्सिको के गुआनाजुआतो में, ला-लोरोना हमारी स्थानीय नदी रियो लाजा के किनारे घूमती है. न्यू मैक्सिको में, आप उसे पूर्णिमा के दिन छिपे हुए पहाड़ी दर्रे में रोते हुए सुन सकते हैं. लॉस एंजिल्स जैसे शहरों में, वो कभी-कभी राजमार्गों पर भी यात्रा करती है.

कोई भी निश्चित नहीं है कि सबसे पहले रोने वाली महिला की कथा किसने गढ़ी. बहुत से लोग मानते हैं कि स्पेनियों के मेक्सिको में आने से बहुत पहले, एज़्टेक लोगों ने वो कहानी सुनाई थी. तब रोती हुई औरत को "सर्प माता" कहा जाता था. लोगों का कहना है कि हर्नान कोर्टेस और उसके स्पेनिश सैनिकों को, मेक्सिको पर आक्रमण करने से ठीक पहले 1500 के दशक की शुरुआत में "सर्प माता" दिखाई दी थी. उनके अनुसार वो रात में रोती थी. वो एक चेतावनी थी. वो अपने "खोए हुए बच्चों" के लिए रो रही थी - मेक्सिको के मूल लोगों के लिए, जिन्हें स्पेनिश लोगों ने पराजित किया था.

जैसे-जैसे समय बीतता गया, स्पेनिश लोगों ने मेक्सिको और दक्षिण-पश्चिमी अमेरिका पर शासन किया. उसके बाद उस भूतनी का स्पेनिश नाम "ला-लोरोना" पड़ गया. पालकों ने ला-लोरोना की कहानी अपने बच्चों को सुनाई. यह बच्चों को चेतावनी देने का एक तरीका भी था कि वे रात में नदियों, झीलों, और अंधेरी, सुनसान सड़कों पर यानि खतरे वाली जगहों पर न जाएं. यह माता-पिता का, बच्चों से प्यार करने का एक तरीका भी हो सकता था, क्योंकि अगर वे अपने माता-पिता की बात नहीं सुनते, तो फिर बच्चों को अपने बुरे कामों का फल भुगतना पड़ता.

हर किंवदंती एक रहस्य होती है. रोती हुई महिला का रहस्य हमें आश्चर्य में डालता है. क्या उसे किसी ने झूठ-मूठ रचा था, या फिर वो असली थी? क्या लोगों ने वाकई में उसे अपने बच्चों के लिए अंधेरी नदी के किनारे रोते हुए सुना था? किसे पता?